

॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

प्रतोदंगृह्यसोन्यतुरमीनपियथापुरा ॥ वाहयामासतानश्वासत्यसेनरथंप्रति ॥ २० ॥ विष्वक्सेनंतुनिर्भिन्नदृष्ट्वापार्योधनंजयः ॥ सत्यसेनंशरैस्तीक्ष्णैर्वार
यित्वा महारथः ॥ २१ ॥ ततः सुनिशितैर्भैरशज्ञस्तस्यमहच्छिरः ॥ कुंडलोपचितंकायाच्चकर्त्तपृतनान्तरं ॥ २२ ॥ तन्निरुत्यशितैर्बाणैर्मित्रवर्माणमाक्षिपत् ॥
वस्सदंतेनतीक्ष्णेनसारथिंचास्यमारिष ॥ २३ ॥ ततः शरशतैर्भूयः संशमकगणान्बली ॥ पातयामाससंकुद्धः शतशोथसहस्रशः ॥ २४ ॥ ततोरजतपुंखेनराजन्
शीर्षमहात्मनः ॥ मित्रसेनस्यचिच्छेदक्षुरप्रेणमहारथः ॥ २५ ॥ सुशर्माणंसुसंकुद्धोजन्त्रुदेशेसमाहनत् ॥ ततः संशमकाः सर्वपरिवार्यधनंजयं ॥ २६ ॥ शरौ
धैर्मच्छुः क्रुद्धानादयंतोदिशोदश ॥ अभ्यर्दितस्तुतज्जिष्णुः शक्रतुल्यपराक्रमः ॥ २७ ॥ ऐन्द्रमखममेयात्मा प्रादुश्यक्रमहारथः ॥ ततः शरसहस्राणि प्रादुरासन्वि
शांपते ॥ २८ ॥ ध्वजानां छिद्यमानानां कर्मुकाणांचमारिष ॥ रथानांसपताकानांतूणीराणां युगैः सह ॥ २९ ॥ अक्षाणामथचक्राणां योक्राणारश्मिभिः सह ॥
कूवराणां वरूथानां पृषत्कानांच संयुगे ॥ ३० ॥ अश्वानांपततांचापि प्रासानामृष्टिभिः सह ॥ गदानांपरिधानांच शक्तितोमरपट्टिशैः ॥ ३१ ॥ शतघ्नीनांसचक्रा
णां भुजानांचोरुभिः सह ॥ कंठसूत्रांगदानांचकयूराणांचमारिष ॥ ३२ ॥ हाराणामथनिष्क्राणांतनुत्राणांच भारत ॥ छत्राणांव्यजनानांच शिरसां मुकुटैः स
ह ॥ ३३ ॥ अश्रूयतमहानशब्दस्तत्रतत्रविशांपते ॥ सकुंडलानिस्वक्षीणिपूर्णचंद्रनिभानिच ॥ ३४ ॥ शिरांस्युर्व्यामदृश्यंतताराजालमिवांबरे ॥ सुस्रग्वीणि सु
लैः ॥ हस्तिभिः पतितैश्चैवतुरंगैश्चाभवन्मही ॥ ३५ ॥ शरीराणि व्यदृश्यंतनिहतानां महीतले ॥ गंधर्वनगराकारं घोरमायोधनंतदा ॥ ३६ ॥ निहतैराजपुत्रैश्चक्षत्रियैश्चमहाब
हैर्हस्यश्वंचास्यतोमहत् ॥ स्वानुगाइवसीदंतिरथचक्राणिमारिष ॥ ३७ ॥ चरतस्तस्यसंग्रामेतस्मिन्लोहितकर्दमे ॥ सीदमानानिचक्राणिसमूहस्तुरगाभ्रश
॥ ४० ॥ श्रमेणमहतायुक्तमनोमारुतरंहसः ॥ वध्यमानंतुतसैव्यंपांडुपुत्रेणधम्विनः ॥ ४१ ॥ प्रायशोविमुखं सर्वनावतिष्ठतभारत ॥ तानजित्वासमरेजिष्णुः
संशमकगणान्वहून् ॥ विरराजतदापार्योविधूमोग्निरिवज्वलन् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

नष्टेऽनुचराः सित्वेयं रथानां गंगं दृष्ट्वा चक्राणि नश्यन्ति अक्षगंगादिभिः ॥ ४३ ॥ सीदमानानि पंकजजानात् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥